9

मध्य प्रदेश में कन्या भ्रूण हत्या – बिगड़ता लिंगानुपात

डॉ. (श्रीमती)वसुधा अग्रवाल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, (अर्थशास्त्र)
डॉ. भगवत सहाय शासकीय महाविद्यालय
ग्वालियर म.प्र.

बालिकाओं की गिरती संख्या, भ्रूण हत्या एक चिंतनीय विषय है। हमारा मंत्र बेटा–बेटी एक समान वाला होना चाहिये। कन्या भ्रूण हत्या समाज के प्रति द्रोह है। यह समय आरोप प्रत्यारोप का नहीं है, बल्कि हर किसी की सामूहिक जिम्मेदारी है। जब तक एक समाज के रूप में हम इस समस्या के प्रति संवेदनशील नहीं है। में, जागरूक नहीं होंगे। हम अपने लिये ही नहीं आने वाली सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी एक भयंकर संकट को निमंत्रण दे रहे है। बेटियों को हमारे देश में देवी का रूप माना जाता है, तो फिर बेटी को मारने का हक किसने दिया है। बेटा बुढ़ापे में सेवा करेगा, यह सोच गलत है। बेटी एक सम्मान है, इस मंत्र को स्वीकार करना होगा। देश में गिरते लिंगानुपात के बारे में अभी नहीं सोचा गया, तो आने वाली पीढ़ी को बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। हम सभी 18वीं सदी के लोगो से भी गये गुजरे है. बेटा बेटी में फर्क हमारे देश की मानसिक बीमारी है। बेटियॉ के फर्ज से हम मुंह नहीं मोड़ सकते है हम तो बेटी को मां का चेहरा भी नहीं देखने देते हैं इसके लिए डॉक्टरों को बेटियॉ की रक्षा की जिम्मेदारी निभानी होगी।

हरियाणा में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभिमान की शुरूआत के साथ ही इस अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए सुकन्या समृद्धि योजना को भी प्रारंभ किया गया। इस योजना के जरिये देश में लड़कियॉ की घटती संख्या और अनुपात में सुधारने के लिये प्रयास किये जाएंगें। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 1000 लड़कों पर केवल 940 बालिकाएं है, हालांकि 2001 की तुलना में इसमें हल्का सा सुधार हुआ है। 2001 में लिंगानुपात 1000 बालकों के पीछे 933 बालिकाएं थी। लेकिन जनसंख्या के आंकड़ों को देखने पर हैरान कर देने वाली जानकारी सामने आती है। 2011 की जनसंख्या आंकडों के अनुसार शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात में बड़ा अंतर है। शिक्षित कहे जाने वाले शहरी क्षेत्रों में लड़को के मुकाबले बेटियॉ की संख्या काफी चिंता जनक है। शहर में 1000 लड़कों के मुकाबले केवल 900 लड़कियॉ ही है। जबकि पिछड़े कहे जाने वाले ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा 1000 लड़कों पर 946 है। लेकिन इससे भी चिंता जनक बात यह है, कि बच्चों के लिंगानुपात में 2001 की तुलना में गिरावट आई है। 2001 की जनगणना के अनुसार बच्चों का लिंगानुपात 927 था जो कि घटकर 2011 में 919 रह गया है। वही दक्षिण भारत में बेटियों को ज्यादा प्रोत्साहन मिलता है और इसी का प्रमाण है, सर्वाधिक महिलाओं वाले ज्यादातर राज्य दक्षिण भारत के हैं। इसमें सबसे ऊपर केरल है जहॉ 1000 पुरूषों के मुकाबले 1084 महिलाएं हैं दूसरी नम्बर पर केन्द्र

शासित प्रदेश पांडूचेरी का नाम है यहॉ पर 1000 पुरूषों के मुकाबले 1037 महिलाएं हैं। वहीं सबसे खराब स्थिति उत्तर भारत के राज्यों में हैं। देश में इस सूची में सबसे नीचे हरियाणा आता है, जहॉ 1000 पुरूषों पर केवल 879 महिलाएं हैं। जबकि दिल्ली जम्मू कश्मीर पंजाब में प्रति 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या 900 से कम है। उम्मीद है, कि 2021 में होने वाली जनगणना में इन आंकड़ो में सुधार हो सके।

मध्य प्रदेश की बेटी बचाओ योजना अब राष्ट्रीय योजना बनने जा रही है। इस योजना में के सरकार ने दतिया, ग्वालियर, भिण्ड और मुरैना शामिल है। मध्य प्रदेश में 1 अक्टूबर 2007 को बेटी बचाओं अभिमान की शुरूआत की थी। इसके पहले लाड़ली लक्ष्मी योजना वर्ष 2006 से प्रारंभ हुई। इसमें बालिका के जन्म से लेकर उसकी पढ़ाई और विवाह तक का दायित्व सरकार उठाती है वर्ष 2014 में लक्ष्मी योजना शुरू की गई। इन योजनाओं के परिणामों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिलीन केन्द्र सरकार के आग्रह पर राज्य सरकार प्रदेश की महिलाओं और बच्चों के हित में चलाई जा रही योजनाओं और उसके परिणामों पर केन्द्रित प्रदर्शनी लगायेगी। इस प्रदर्शनी में लाडली लक्ष्मी स्वागत लक्ष्मी बेटी बचाओ, शौर्यादल, तेजस्विनी, बालविवाह, कन्या भ्रूण हत्या आदि योजना की जानकारी देने के साथ ही इसके सकारात्मक परिणाम को बताया जायेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों ने कुछ वर्षो में जिस तेजी से परचम फहराने शुरू किये हैं, उसे देखते हुए बेटी के जन्म पर जो व्यक्ति परेशान होता है या उसके जन्म को रोकता है उसे अभागा ही कहा जाएगा। लड़के और लड़कियों क अनुपात का कोई भी चित्र तब तक पूरा नहीं होगा जब तक मध्यप्रदेश राज्य का जिक्र नहीं होगा। सामाजिक असंतुलन का दूर करकें, पिछड़ेपन से उबरनें, सामंती कुसंस्कारों को विसर्जित करने के लिए अगर इस भूभाग में कहीं तीव्र तड़प है तो वह मध्यप्रदेश है। मध्यप्रदेश में बेटी बचाओ अभियान की रणनीति तैयार कर महिलाओं के सशक्तिकरण की बात की गई। किंतु कन्या भ्रुण हत्या के कारण बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है।

जानकारी के मुताबिक भिण्ड जिला ग्वालियर चम्बल अंचल का ही नहीं अपितु प्रदेश का ऐसा जिला बना गया है। जहॉ कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में शासन की नाकामयाबी रही है। वैसे अगर देखें तो प्रदेश के अन्य जिलों में भी यह कुत्सित अपराध हो रहा है। मगर भिण्ड़ की स्थिति कुछ ज्यादा गंभीर है। भिण्ड़ जिले में पुरूषों का तुलानात्मक औसत 1000 पुरूषों पर 829 महिलाएं हैं। भिण्ड़ जिले की गोहद तहसील में सबसे कम 1000 पुरूषों पर 802 महिलाएं है। गोहद तहसील के मुख्यालय के आसपास स्थित गांवों में तो और भी भयानक स्थिति है। कुछ गांवों में तो 450 तक ही महिलाएं रह गई है। इसी प्रकार मुरैना जिले में भी मुरैना तहसील के आस पास गांवों की हालत भी लगभग यही है। मुरैना तहसील में महिलाओं का अनुपात 806 है, जबकि जौरा में 808 है। इनके अलावा ग्वालियर चम्बल संभाग की अन्य जिलों में तहसील स्तर पर जहॉ महिलाओं की संख्या कम है उनमें शिवपुरी जिले के नरवर 829, ग्वालियर के पिछोर में 839, दतिया के सेवढ़ा में 840, श्योपुर के विजयपूर में 855 अशोक नगर जिले के मुगांवली में 870, गुना जिले की आरॉन तहसील में 873 की संख्या रह गई है। 1981 की जनगणना में भारतीय जनसंख्या में 0–6 की आयु समूह की जनसंख्या के आंकड़े लिंग क आधार पर उपलब्ध कराती है। स्त्री पुरूष अनुपात एवं 0–6 वर्ष के बच्चों के लिंगानुपात की गणना निम्नतालिका से की गई हैः–

तालिका कं0 1

स.कं.	जनसंख्या और 0–6 वर्ष के बच्चों का लिंगानुपात जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या का लिंगानुपात	0–6 के बच्चों का लिंगानुपात
1	1961	941	976
2	1971	930	964
3	1981	934	962
4	1991	937	945
5	2001	933	927
6	2011	940	914

स्त्रोतः भारत की जनगणना 2011

तालिका कं0 2

स.कं.	भारत के विभिन्न राज्यों में शिशु	1991	2001	2011
1	आंधप्रदेश	975	961	943
2	असम	975	965	957
3	छत्तीसगढ़	984	975	964
4	हरियाणा	879	819	830
5	गुजरात	928	883	886
6	कर्नाटक	960	946	943
7	केरल	958	960	959
8	मध्यप्रदेश	941	932	912
9	महाराष्ट्र	946	913	883
10	पंजाब	875	798	846
11	राजस्थान	916	909	883
12	उत्तरप्रदेश	927	916	889
13	तमिलनाडु	948	942	946
14	बिहार	953	942	933

स्त्रोतः पापुलेशन फाउन्डेशन ऑफ इंडिया, 2006 तथा भारत की जनगणना 2011

तालिका कं0 3
भारत में ग्रामीण और नगरीय लिंगानुपात

स.कं.	प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या (वर्ष)	ग्रामीण	नगरीय
1	1951	965	859
2	1961	963	845
3	1971	951	847
4	1981	954	880
5	1991	938	894
6	2001	946	901
7	2011	947	926

स्त्रोतः जनसंख्या की जनगणना 2011

तालिका कं0 4

स.कं.	सर्वाधिक लिंगानुपात वाले पॉच जिले		न्यूनतम लिंगानुपात वाले पॉच जिले	
1	बालाघाट	1000:1021	भिन्ड़	1000:837
2	टलीराजपुर	1000:1011	मुरैना	1000:840
3	मंडला	1000:1008	ग्वालियर	1000:864
4	डिंडोरी	1000:1002	दतिया	1000:873
5	झाबुआ	1000:990	शिवपुरी	1000:877

कन्या भ्रूण हत्या के पीछे गरीबी, बेकारी और दिमागी दीवालियापन मुख्य कारण है। सरकार इसको निमंत्रित करने के लिए कुकुरमुत्तों की तरह उग आए अल्ट्रासाउड क्लीनिकों पर धड़ल्ले से छापे की कार्यवाही कर रही है, परंतु फिर भी सरकार की रणनीति काम नहीं कर पा रही है। अभी तक प्रदेश शासन ने अल्ट्रासाउड क्लीनिकों के लाईसेंस निरस्त कर दिए है अभी तक इस तरह के ज्यादा मामले पकड़े नहीं गए है। भ्रूण हत्या के खिलाफ बने कानून के उल्लंघन के महज 406 मामले अभी तक पढ़े गए हैं। स्थिति की गंभीरता तब और सवालिया निशान लगाती है, जब इनमें से केवल दो ही डॉक्टरों को दोषी पाया गया है। दुःख की बात यह है, कि चिकित्सा समुदाय द्वारा यह तर्क दिया गया है, कि प्रत्येक व्यक्ति को चयन करने का अधिकार है, और विशेषज्ञ का यह कर्त्तव्य है कि वह उस इच्छा को पूरा करें। मुम्बई उच्च न्यायालय में एक दंपत्ति ने याचिका के माध्यम से पी.एन.डी.टी एक्ट की संवैधानिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए यह तर्क दिया है कि यह एक्ट उनके परिवार की संतुलित करने के अधिकार को अति क्रमित करता है। यह तर्क भी दिया जाता रहा है कि जब मांग और पूर्ति का सिद्धांत समस्या का समाधान कर सकता है तो किसी नियंत्रण की क्या आवश्यकता है।

शीर्ष पर बैठे लोग इस समस्या के सही परिपेक्ष्य में नहीं देख पा रहे है लाड़ली लक्ष्मी योजना एवं अन्य लोक लुकावनी योजनाओं का प्रभाव कितना सीमित है यह हाल ही के आंकड़ों में दर्शा रहे है। क्या हम एक राष्ट्र के रूप में इस चुनौती का सामना करने में सक्षम नहीं है?